नरेन्द्र मोहन के नाटकों में इतिहास बोध

दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा
की पी–एच.डी. (हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय
का प्रस्तावित उद्देश्य एवं रूपरेखा

निर्देशिका :–
डॉ.स्वामीप्यारी कौड़ा,
एसो. प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,
कला संकाय, डी.ई.आई.,
दयालबाग, आगरा।

शोधकर्त्री :–
सपना अग्रवाल
एम.ए.,एम.फिल्.(हिन्दी)

संकाय प्रमुख :–
प्रो0 उर्मिला आनंद

विभागाध्यक्ष :–
प्रो0 शर्मिला सक्सेना

<u>कलासंकाय</u>
दयालबाग़ शिक्षण संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी),
दयालबाग़, आगरा– 282005

नरेन्द्र मोहन के नाटकों में इतिहास बोध

समकालीन हिन्दी साहित्यकारों में एक बहुचर्चित जाना माना नाम नरेन्द्र मोहन है। डॉ0 नरेन्द्र मोहन कवि, आलोचक, चिन्तक, नाटककार, पटकथाकार, और सम्पादक के रूप में जाने जाते हैं। नरेन्द्र मोहन हिन्दी के उन गिने–चुने लेखकों में से एक हैं, जिन्होंने साहित्य को जीवन के पर्याय के रूप में तथा जिंदगी जीने के व्यापक अर्थ में ग्रहण किया है–गहरी निष्ठा और निरन्तरता से। सृजनात्मकता निस्संदेह उनके लिए जिन्दगी जीने का एक तरीका रहा है, एक ऐसी राह जिस पर वह आज भी चल रहे हैं।

नरेन्द्र मोहन का व्यक्तित्व बहुआयामी है। कवि, आलोचक, तथा नाटककार, के रूप में सुविख्यात नरेन्द्र मोहन का जन्म 30 जुलाई 1935 को लाहौर (अब पाकिस्तान में) में साहित्य और कलाओं के अध्यापक श्री रूपलाल शर्मा और सुरुचि सम्पन्न माता विद्यावती शर्मा (बीजी) के घर रात के बारह बजे हुआ, जब लाहौर में फ़साद हो जाने की वजह से कर्फ़्यू लगा हुआ था। 19 अगस्त 1947 को उनसे लाहौर हमेशा के लिए छूट गया, तथा वे अमृतसर खालसा कॉलेज शरणार्थी शिविर में आ गए। तत्पश्चात् अक्टूबर में वे पालमपुर आए। उन्होंने मैट्रिक तथा एम.ए. की शिक्षा अम्बाला से प्राप्त की। सन् 1966 में पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने आधुनिक हिन्दी कविता ('आधुनिक हिन्दी कविता में अप्रस्तुत विधान') में पी–एच.डी. की उपाधि ग्रहण की । नरेन्द्र मोहन का विद्यार्थी जीवन में ही साहित्य लेखन की ओर रुझान था, सन् 1954 से उन्होंने कविताएं और लेख लिखने प्रारम्भ कर दिए थे, तथा सन् 1960 तक वह अच्छी तरह से साहित्यिक हलकों में पहचाने जाने लगे। सन् 1958 में खालसा कॉलेज लुधियाना में व्याख्याता के रूप में उनकी पहली नियुक्ति हुई थी। इसके बाद उन्होंने अलग–अलग पंजाब महाविद्यालयों और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय में व्याख्याता और सहायक के रूप में कार्य किया। सन् 1967 में नरेन्द्र मोहन एस.जी.टी.बी. खालसा कॉलेज, दिल्ली गए और दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में (1988–2000) रीडर के रूप में कार्य किया। नरेन्द्र मोहन ने 5 साल (1969–1973) तक साहित्यिक पत्रिका 'संचेतना' भी संपादित की। नरेन्द्र मोहन ने कविता तथा नाटक के साथ–साथ अन्य विधाओं में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। किसी भी लेखक या साहित्यकार के लिए यह एक गौरव की बात है कि उसके साहित्य का अन्य भाषाओं में भी अनुवाद हो, और यह गौरव नरेन्द्र मोहन को प्राप्त हुआ। उनकी कविताओं, नाटकों और महत्त्वपूर्ण लेखों का पंजाबी, उर्दू, मराठी, अंग्रेजी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है।

नाटक का जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। नाटक किसी भी समाज के लोकजीवन का दर्पण होता है। नाटक जीवन की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है, क्योंकि दृश्य–श्रव्य माध्यम होने के कारण वह अधिक से अधिक प्रेक्षकों तक पहुँचता है। नाटक के प्रस्तुतीकरण से दर्शक समाज की यथार्थ समस्याओं को भली प्रकार जान सकता है तथा उनसे परिचित हो सकता है। नाटक आज की समस्याओं के निरूपण में सर्वाधिक समर्थ है। आम आदमी की दुर्दशा को अभिव्यक्त करने का काम नाटककारों ने बेहतर ढंग से किया है। इधर जो नाटक लिखे गए हैं, मोहन राकेश के नाटकों से लेकर नरेन्द्र मोहन के नाटकों तक, वे इस बात के प्रमाण हैं।

नरेन्द्र मोहन के साथ एक नई पीढ़ी नाटक के क्षेत्र में उतरी है। अपने प्रत्येक नाटक में उन्होंने नई नाट्य–वस्तु, नाट्य–शिल्प और प्रयोगधर्मिता का परिचय दिया है। उनके नाटकों को हम संघर्ष, विरोध, अन्वेषण और सत्य के नाटक कह सकते हैं। नरेन्द्र मोहन के सभी नाटक समसामयिक यथार्थ, आज की विसंगतियों और अंतर्विरोधों से, मानवीय विडम्बनाओं, धर्मोन्माद, संप्रदायवाद, यथार्थ, आतंकवाद, सत्ता और आम आदमी के संघर्ष से, आज के ज्वलंत प्रश्नों से जुड़ते जाने वाले नाटक हैं। डॉ0 नरेन्द्र मोहन के अधिकांश नाटकों का आधार इतिहास रहा है, उन्होंने अपने इसी इतिहास बोध को आधार बनाकर विभिन्न परिदृश्यों को चित्रित किया है। उनके नाटकों में विभिन्न परिदृश्य – राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, धार्मिक तथा मानवीय आदि में इतिहास बोध प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होता है। नरेन्द्र मोहन के नाटकों में निर्द्वन्द्व भाव से जीवन की खुली सच्चाईयाँ, कड़ुवाहट और कठिनाइयाँ साकार हैं, वह अपने नाटकों में तमाम संघर्ष एवं विरोध को वैचारिक एवं रचनात्मक स्तर पर ग्रहण करते हैं। नरेन्द्र मोहन इतिहास के मिथक को वर्तमान जीवन के यथार्थ में ढालकर प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त हैं।

नरेन्द्र मोहन एक नाटककार के रूप में इस कथन को नकारते हैं कि हिन्दी में मौलिक नाटकों का अभाव है या यह कि नाटक लिखे नहीं जा रहे हैं। उन्होंने अपने विभिन्न नाटकों से मानवीय संवेदना को और व्यापक सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक सरोकारों को नाटक के रूप में आकार दिया है, जिनमें उनकी खोजी वृत्ति, अनवरत बाह्य और आन्तरिक संघर्ष और खतरों से लड़ने–जूझने की चुनौतियों का एहसास होता है। अनेक स्तरीय चरित्रों की रचना से अभिनेताधर्मी रंगमंच की परिकल्पना को भी उन्होंने साकार किया है और भारतीय रंगमंच की अवधारणा और जन–जीवन में व्याप्त लोकधर्मिता को भी, जहाँ शैली–शिल्प गौण हो जाता है। लेकिन अनेक स्तरीयता, प्रतीकार्थकता, बिंबात्मकता, कविता, संगीत जैसे तत्त्व उनके कवि होने के कारण इन नाटकों में उभरते हैं। कहते हैं भाषा शक्ति का समग्र विकास, उसका विलक्षण सौंदर्य नाटक में ही

आता है क्योंकि वह लिखित शब्द को वाचिक, उच्चारित वैभव देता है—ध्वनियों का, व्यंजनाओं का, क्रिया का। छंद, लय, भाषा, युग—स्वर की अभिव्यक्ति होने के कारण नरेन्द्र मोहन के नाटकों में जो सामूहिक प्रतिवाद का स्वर है और मानवीय राग है, उससे वह लोकमानस के नाटक हैं और प्रासंगिक भी।

नरेन्द्र मोहन के नाटकों में इतिहास बोध के साथ रंगमंचीय प्रयोग भी देखने को मिलते हैं। नाट्यलेखन के साथ नरेन्द्र मोहन को अधिक जूझना पड़ा है। प्रत्येक नाटक के मंचन के साथ वे खुद जुड़े रहे हैं तथा नाट्यमंचन को उन्होंने गम्भीरता से लिया है। यही कारण है कि उनके नाटकों में नाट्यानुभूति के साथ—साथ रंगानुभूति भी है। वे रंग—कर्म को अपने नाटकों का अभिन्न हिस्सा बनाते हैं तथा नाट्य—रचना को सीधा—सीधा रंगमंच के साथ जोड़कर देखते हैं। उनके सभी नाटक पहले मंचित हुए फिर प्रकाशित। नरेन्द्र मोहन अपने नाटकों में रंग उपकरणों का प्रयोग आवश्यकतानुसार करते है। रंगकर्मी, रंग उपकरण, रंगमंच आदि के सम्बन्ध में नई—से—नई जानकारी प्राप्त करने के लिए वे उत्सुक रहते हैं। शब्द और थिएटर की एकजुटता उनके नाटकों की एक केन्द्रीय विशेषता है। नाटक में शब्द, दृश्य तथा गति के महत्त्व को उन्होंने समझा है। वे शब्दों को दृश्यों में ढालने में सफल रहे है। मंच पर उनके शब्द मूर्त होते हैं, और दृश्यों में ढलते हैं। वे काव्यभाषा को नाट्यभाषा पर हावी नहीं होने देते। कविता, काव्यांशों का प्रयोग उनके नाटकों में जहाँ भी हुआ है वह नाटकीयता लाने में सहायक हुआ है। ये काव्यांश दृश्य—निर्माण में उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

नरेन्द्र मोहन के लिए लिखना और देखना, आलेख और रंग—कर्म एक ही सिक्के के दो पहलू रहे हैं, वहाँ वाचिक और अवाचिक में एक अर्थ पूर्ण संबंध उभर आता है। उनके नाटकों को पढ़ते हुए हम रंग भाषा से स्पन्दित अनुभव करते हैं। उनके नाटकों में रंग—कर्मियों की रुचि का यह एक प्रमुख कारण है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नरेन्द्र मोहन ने अपने नाटकों में इतिहास बोध की व्यापक अवधारणा के आधार पर अपने रंगमंचीय प्रयोगों की सफलता के जादू से दर्शकों को विस्मित किया है। विस्मय अक्सर हमारी चेतना को जड़ बनाता है, पर नरेन्द्र मोहन के रंगकौशल का जादू हमें इसीलिए प्रभावित करता है कि उनकी प्रस्तुतियों में मानव जीवन का यथार्थ व सशक्त चित्रण हुआ है जिसके संयोग से उनके नाटक और भी अधिक प्रभावशाली हो गये हैं। जिसमें उन्होंने प्रमुख रूप से इतिहास बोध को समसामयिक यथार्थ, आज की विसंगतियों और अंतर्विरोधों, मानवीय

विडम्बनाओं, धर्मोन्माद, संप्रदायवाद, यथार्थ, आतंकवाद, सत्ता, आम आदमी के संघर्ष, तथा आज के ज्वलंत प्रश्नों को विभिन्न परिदृश्यों के साथ जोड़कर रंगमंचीय प्रयोग के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। इस प्रकार नरेन्द्र मोहन के सभी नाटक किसी न किसी रूप में विसंगति जुड़े नाटक हैं। नाटककार आज की जीवन्त–ज्वलन्त समस्याओं और प्रश्नों को, विसंगतियों और अन्तर्विरोधों को समग्र मानवीय सरोकार के साथ आम आदमी तक पहुँचाना चाहता है। नरेन्द्र मोहन के नाटकों में ये संवेदना और जन–चेतना के तत्त्व मिलते हैं, जिसमें अराजकता, अन्याय, अत्याचार, आतंक, अभिव्यक्ति का जीवंत चित्रण हुआ है। हिन्दी शोध जगत में नरेन्द्र मोहन को वह सम्मान प्राप्त है कि उन पर अनेक शोधकार्य हुए हैं और भविष्य में भी होते रहेंगे। उनके द्वारा रचित साहित्य पर हुए पूर्ववर्ती कार्यों पर प्रकाश डालना भी मेरे शोध प्रबन्ध का विषय होगा। मैंने अपनी विहंगम दृष्टि से देखा व समझा है कि 'नरेन्द्र मोहन के नाटकों में इतिहास बोध' विषय पर अभी तक कोई शोधकार्य सम्पन्न नहीं हुआ है। अतः इस विषय को आधार बनाकर मैं अपना शोधकार्य आरम्भ करने जा रही हूँ। मेरा यह शोधकार्य पूर्णरूपेण मौलिक तथा सुधी पाठकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगा, ऐसी अभिलाषा है।

प्रस्तावित शोध कार्य की रूपरेखा

नरेन्द्र मोहन के नाटकों में इतिहास बोध

प्रथम अध्याय :– (क) नरेन्द्र मोहन का जीवन परिचय एवं सृजनशीलता
(ख) नरेन्द्र मोहन की सृजनशीलता से संबंधित पूर्ववर्ती कार्य

द्वितीय अध्याय :– नरेन्द्र मोहन के नाटकों का संक्षिप्त परिचय :–

- सींगधारी
- कहै कबीर सुनो भाई साधो
- कलन्दर
- नो मैंस लैण्ड
- अभंग गाथा
- मिस्टर जिन्ना
- मंच अँधेरे में
- हद हो गई, यारों!
- मलिक अंबर

तृतीय अध्याय :– नरेन्द्र मोहन के नाटकों में निहित विभिन्न परिदृश्य एवं इतिहास बोध :–

- राजनीतिक परिदृश्य एवं इतिहास बोध
- सामाजिक परिदृश्य एवं इतिहास बोध
- सांस्कृतिक परिदृश्य एवं इतिहास बोध
- मनोवैज्ञानिक परिदृश्य एवं इतिहास बोध
- धार्मिक परिदृश्य एवं इतिहास बोध
- मानवीय परिदृश्य एवं इतिहास बोध

चतुर्थ अध्याय :– नरेन्द्र मोहन के नाटकों का शिल्प–विधान :–

- मिथकों का प्रयोग
- प्रतीकों का प्रयोग
- लोकतत्त्वों का प्रयोग
- संवाद–योजना
- नाट्य–भाषा

<u>पंचम अध्याय</u> :– नरेन्द्र मोहन के नाटकों में रंगमंचीय प्रयोग :–

- दृश्यबन्ध अथवा दृश्य–योजना
- नाटकीय तनाव, संघर्ष, द्वन्द्व
- पात्र अथवा चरित्र–सृष्टि
- कार्य व्यापार एवं अभिनय
- रंगदीपन अथवा प्रकाश–योजना
- ध्वनि, गीत, संगीत एवं कविता प्रयोग
- नाटकों की रंगप्रस्तुतियाँ (विभिन्न नाट्य–दलों द्वारा)

<u>उपसंहार</u>

<u>परिशिष्ट</u> :– सृजनात्मक साहित्य से संबंधित आधार ग्रन्थ सूची।

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित संदर्भ ग्रन्थ सूची।

कोश ग्रन्थों की सूची।

पत्र–पत्रिकाओं की सूची।

परिशिष्ट

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित आधार ग्रन्थ :–

क्र.सं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1.	नरेन्द्र मोहन	सींगधारी	जगतराम एण्ड संस, नई दिल्ली	2002
2.	सं. गुरचरण सिंह / सुमन पंडित	कहै कबीर सुनो भाई साधो (नरेन्द्र मोहन रचनावली–2)	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
3.	सं. गुरचरण सिंह / सुमन पंडित	कलन्दर (नरेन्द्र मोहन रचनावली–2)	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
4.	सं. गुरचरण सिंह / सुमन पंडित	नो मैंस लैण्ड (नरेन्द्र मोहन रचनावली–2)	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
5.	सं. गुरचरण सिंह / सुमन पंडित	अभंग गाथा (नरेन्द्र मोहन रचनावली–2)	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2006
6.	नरेन्द्र मोहन	मिस्टर जिन्ना	हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली	2005
7.	नरेन्द्र मोहन	मंच अँधेरे में	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	2010
8.	नरेन्द्र मोहन	हद हो गई, यारों!	किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली	2009
9.	नरेन्द्र मोहन	मलिक अंबर	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली	2011

सृजनात्मक साहित्य से संबंधित सन्दर्भ ग्रन्थ :–

क्र.सं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1.	गोविन्द चातक	हिन्दी नाटक इतिहास के सोपान	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली	2002
2.	डॉ0 बी0 बालचन्द्र	साठोत्तरी हिन्दी नाटक : परम्परा और प्रयोग	अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर	2003

3.	डॉ0 प्रभात शर्मा	हिन्दी नाटक : इतिहास–दृष्टि और समकालीन–बोध	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2006
4.	डॉ0 विश्वनाथ शर्मा	हिन्दी रंगमंच का उद्भव और विकास	राज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	2001
5.	डॉ0 नीलम राठी	साठोत्तर हिन्दी नाटक	संजय प्रकाशन, दिल्ली	2001
6.	डॉ0 लवकुमार लवलीन	समकालीन हिन्दी नाटक	भावना प्रकाशन, दिल्ली	1997
7.	सुन्दरलाल कथूरिया	समकालीन हिन्दी नाटक	के. के. पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली	1999
8.	डॉ0 दिनेश चन्द्र वर्मा	समकालीन हिन्दी नाटक और नाटककार	चिन्तन प्रकाशन, कानपुर	2003
9.	शैलेजा भारद्वाज	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक साहित्य में लोकतत्त्व	भारतीय कला प्रकाशन	1998
10.	डॉ0 जशवंत भाई पंड्या	समकालीन हिन्दी नाटक	ज्ञान प्रकाशन, कानपुर	2005
11.	डॉ0 देवेन्द्र स्वामी	आधुनिक नाटक दृष्टि एवं शिल्प	भावना प्रकाशन, दिल्ली	2006
12.	डॉ0 जगदीश शर्मा	समकालीन रंगमंच और नया नाटक	राजस्थानी ग्रंथाधार, जोधपुर	1998
13.	डॉ0 देवकिशन चौहान	समसामयिक नाटकों में वर्ग चेतना	स्वराज प्रकाशन, दिल्ली	1997
14.	डॉ0 लाल साहब सिंह	हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना	नमन प्रकाशन, दिल्ली	1998
15.	डॉ0 शिवराम माली	नाटक और रंगमंच	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली	1979
16.	डॉ0 देवेन्द्र कुमार गुप्ता	हिन्दी नाट्यशिल्प बदलती रंगदृष्टि	पीयूष प्रकाशन, दिल्ली	2005
17.	डॉ0 शेखर शर्मा	समकालीन संवेदना और नाटक	भावना प्रकाशन, दिल्ली	1998
18.	डॉ0 परमेश्वरी शर्मा	हिन्दी नाटक : वर्तमान संदर्भ	संजय प्रकाशन	2009

कोश ग्रन्थ :–

क्र.सं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1.	प्रतिभा अग्रवाल	भारतीय रंगकोश, हिन्दी, खण्ड–2	राजकमल प्रकाशन	2006
2.	धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोश भाग–1	ज्ञानमंडल वाराणसी	सं. 2015 वि.

3.	श्रीनवल	नालन्दा विशाल शब्द सागर	ला. फूलचन्द जैन, नई दिल्ली	2007
4.	रमाशंकर शुक्ल रसाल	भाषा शब्द कोश	रामनारायणलाल बेनीप्रसाद इलाहाबाद	1971

पत्र–पत्रिकाएँ :–

क्र.सं.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशन	संस्करण
1.	सं. प्रयाग शुक्ल	रंग प्रसंग	राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय	2009
2.	सं. नामवर सिंह	आलोचना	राजकमल प्रकाशन	जनवरी–मार्च 2010
3.	नैमिचन्द जैन	नटरंग	नई दिल्ली	अप्रैल–सितंबर 1969
4.	रमेश दवे	समावर्तन	उज्जैन	मार्च 2009
5.	सं. सीमा ओझा	आजकल	नई दिल्ली	सितम्बर 2009